अध्याय - 9

प्राचीन भारत का इतिहास

हम पढ़ेंगे

9.1 प्राचीन भारत का ऐतिहासिक कालक्रम।
9.2 सिंधु घाटी सभ्यता अथवा हड़प्पा सभ्यता।
9.3 वैदिक सभ्यता।
9.4 महाकाव्यकालीन सभ्यता।
9.5 जनपद एवं महाजनपदों का युग।
9.6 जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म।
9.7 मौर्य साम्राज्य।
9.8 गुप्त साम्राज्य।
9.9 हर्ष साम्राज्य।

9.1 प्राचीन भारत का ऐतिहासिक कालक्रम

भारत की पुरातात्विक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्परा अत्यन्त समृद्ध एवं गौरवशाली रही है। प्राचीन भारत के इतिहास में सिन्धु एवं सरस्वती सभ्यता अथवा हड़प्पा सभ्यता, वैदिक–सभ्यता, महाकाव्यकाल, बौद्ध एवं जैन धर्म, मौर्य साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य एवं हर्ष साम्राज्य शामिल है। इन सभ्यताओं एवं राजवंशों की अपनी विशिष्टता रही है। प्राचीन काल से ही भारतीयों में ऐतिहासिक चेतना विद्यमान थी। अब प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाली सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। जैसे–

1. साहित्यिक स्त्रोत: भारतीय साहित्य में लौकिक एवं धार्मिक दोनों ही प्रकार के अंश प्राप्त होते हैं। वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यर्जुवेद, अर्थववेद), आरण्यकों, उपनिषदों, वेदांग, सूत्रों, महाकाव्यों (रामायण महाभारत), स्मृतियों, पुराणों, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, मुद्राराक्षस (विशाखदत्त रचित), अर्थशास्त्र (चाणक्य रचित) महाभाष्य (पतंजलिकृत), अष्टाध्यायी (पाणिनीकृत), राजतरंगिणी (कल्हण रचित) आदि साहित्यिक स्त्रोत प्राचीनकालीन भारत के भौगोलिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक जानकारी के प्रमुख स्त्रोत हैं।

2. पुरातात्विक स्त्रोत : पुरातात्विक सामग्री प्राचीन भारत के अध्ययन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। अभिलेख, शिलालेख, स्तम्भलेख, ताम्रपत्र लेख, भोजपत्र लेख, मूर्तिलेख, मुद्राएं, स्मारक आदि पुरातात्विक सामग्री की खोज, उत्खनन एवं अध्ययन से प्राचीन इतिहास के अध्ययन में सहायता प्राप्त होती है।

प्राचीन भारत की प्रमुख सभ्यताएं व राजवंश	कालक्रम (समयानुमान लगभग)
• सिन्धु सभ्यता	2500 ई.पू. से 1750 ई. पूर्व
• वैदिक सभ्यता	1500 ई.पू. से 600 ई. पूर्व
• जनपद एवं महाजनपद	600 ई.पू. से 400 ई. पूर्व
• मौर्यकाल	322 ई.पू. से 187 ई. पूर्व
• गुप्तकाल	320 ई. से 570 ई.
• सम्राट हर्ष	606 ई. से 646 ई.

3. विदेशियों के यात्रा विवरण : विदेशी लेखकों से हमें उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। इरानी, यूनानी, चीनी, तिब्बती, अरबी आदि देशों के व्यापारी, यात्री, राजदूतों, विद्वानों आदि के विवरणों से प्राचीन भारत के समाज की विभिन्न अवस्थाओं के अध्ययन की सामग्री उपलब्ध होती है। यद्यपि विदेशी यात्रियों में से अनेक के संस्मरण, किंवदंतियों से प्रभावित होने के कारण पूर्ण रूप से प्रमाणिक नहीं माने जा सकते हैं फिर भी भारतीय इतिहास के अध्ययन में इनका महत्वूपर्ण स्थान है।

9.2 सिन्धु घाटी सभ्यता अथवा हड़प्पा सभ्यता

भारत और पाकिस्तान के उत्तरी पश्चिमी भाग में सिन्धु व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में जो नगर सभ्यता विकसित हुई उसे सामान्यत: सिन्धु घाटी सभ्यता कहा जाता है। भौगोलिक दृष्टि से यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता थी। इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान, दक्षिणी अफगानिस्तान तथा भारत के राजस्थान, गुजरात, जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र तक है। इस सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा चन्हुदड़ो (पाकिस्तान), रोपड़ (पंजाब), रंगपुर (सौराष्ट्र), लोथल, सुरकोटडा, धौलाबीरा (गुजरात), कालीबंगा (राजस्थान), बणावली, राखीगढ़ी (हरियाणा), मांडा (जम्मू कश्मीर), आलमगीरपुर, हुलास (उत्तरप्रदेश) इत्यादि। दिए गए मानचित्र में उक्त नगरों को देखिए।

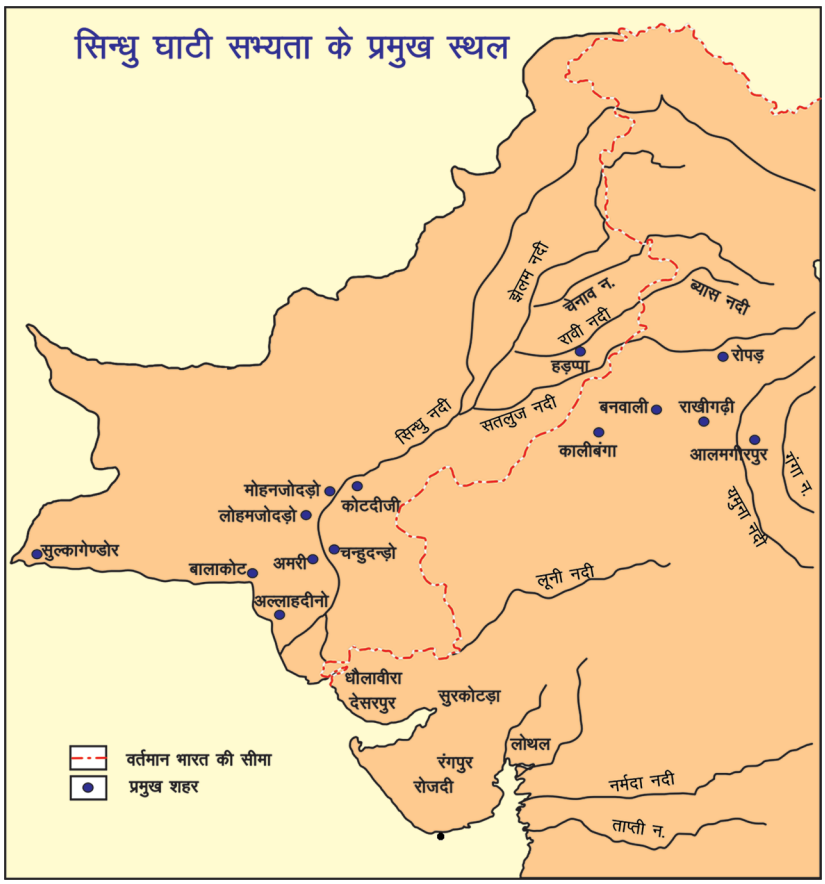

सिन्धु सभ्यता की खोज सन् 1921 में डॉ. दयाराम साहनी ने हड़प्पा नामक स्थल पर की थी जो रावी नदी के तट पर स्थित है। मोहन जोदड़ो, जिसका शब्दिक अर्थ है 'मुर्दों का टीला' की खोज सन् 1922 में राखलदास बेनर्जी ने की थी। यहीं पर प्रसिद्ध विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ था। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर (प्राचीन सरस्वती) के किनारे पर स्थित कालीबंगा इस सभ्यता का प्रमुख नगर हैं। पुरातत्ववेत्ताओं ने पुरातत्व परम्परा के अनुसार इस सभ्यता का नाम इसके सर्वप्रथम ज्ञात स्थल के नाम पर 'हड़प्पा सभ्यता' दिया। कालान्तर में इस सभ्यता के प्रचुर अवशेष सिन्धु घाटी से दूर विलुप्त सरस्वती नदी क्षेत्र में तथा गंगा-यमुना के दोआब तथा नर्मदा-ताप्ती दोआब तक मिले हैं। इसी आधार पर कुछ पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा इसे सिन्धु-सरस्वती सभ्यता का नाम दिया जा रहा है।

सरस्वती नदी

भारतीय इतिहास की प्रारंभिक आधारभूत सभ्यताओं सिन्धु-सभ्यता व वैदिक सभ्यता में पारस्परिक संबंध है या नहीं यह इतिहास का एक बहुत बड़ा प्रश्न है। नवीनतम शोध एवं संभावनाएँ इस बात का संकेत करती हैं कि ये दोनों सभ्यताएँ पूर्णत: भिन्न न होकर परस्पर सम्बद्ध थीं। नवीन खोजों से ज्ञात हुआ है कि सिन्धु सभ्यता के लगभग दो-तिहाई पुरास्थल लुप्त सरस्वती नदी एवं उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में मिले हैं। सरस्वती नदी के विषय में की गई खोजों में विष्णु श्रीधर वाकणकर का योगदान महत्वपूर्ण है। वैदिक काल में सरस्वती एक

बहुत बड़ी नदी थी। इसका उल्लेख वेदों में बार-बार आया है। पिछले 20 वर्षों में हवाई एवं भू-सर्वेक्षणों के माध्यम से सरस्वती नदी के प्रवाह क्षेत्र को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। यह माना गया है कि हिमालय में शिवालिक श्रृंखलाओं से सरस्वती नदी का उद्गम स्थल रहा होगा, जहाँ से यह अम्बाला, थानेश्वर, कुरुक्षेत्र, पहोवा, सिरसा, हांसी, अग्रोहा, हनुमानगढ़, कालीबंगा होती हुई अनूपगढ़ से सूरतगढ़ तक बहती थी। कालान्तर में भू-गर्भीय परिवर्तन के कारण सरस्वती नदी धीरे-धीरे सूख गई और कुछ समय बाद लुप्त हो गई। सरस्वती नदी पर विकसित सभ्यता के विषय में निरंतर शोध चल रहा है।

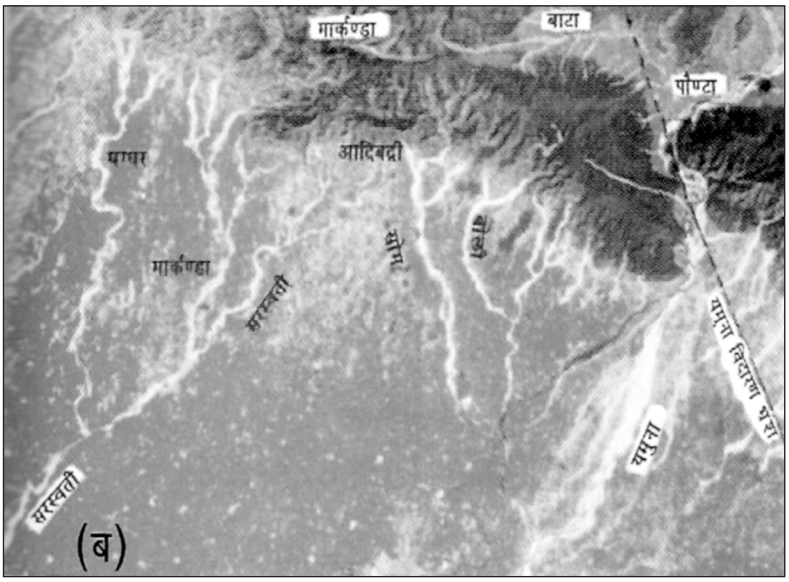

प्राचीन सरस्वती व यमुना नदी तंत्र की नदियां दिखाते हुए
भू-उपग्रह छायाचित्र (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन)

बीसवीं सदी में प्राचीन भारत का इतिहास लिखते समय इतिहासकारों और पुरातत्ववेत्ताओं ने भारत में प्राचीनकाल में सभ्यता के विकास का एक क्रम निर्धारित किया। इस क्रम में पहले सिन्धु सभ्यता जिसे हड़प्पा सभ्यता कहा जाता है आई, उसके पश्चात आर्यों का आगमन हुआ, तदुपरान्त हड़प्पा सभ्यता का विनाश हुआ। इसके बाद एक नई सभ्यता का विकास हुआ, जिसे वैदिक सभ्यता का नाम दिया गया।

कुछ आधुनिक इतिहासकार और पुरातत्ववेत्ता अपनी नई शोधों के आधार पर इस विकास क्रम को स्वीकार नहीं करते, वे इस क्रम निर्धारण से सहमत नहीं हैं। वे नहीं मानते थे कि आर्य बाहर से आए। वे मानते हैं कि हड़प्पा और वैदिक सभ्यता दोनों एक ही क्षेत्र (सप्त-सिन्धु) में पुष्पित पल्लवित हुई। अतः यह दोनों सभ्यताएँ अभिन्न हैं। अनेक इतिहासकार और पुरातत्ववेत्ता हड़प्पा और वैदिक सभ्यता को अभिन्न अंग मानते हैं। वे इस अभिन्नता के तीन प्रामाणिक आकलन देते हैं। पहला, दोनों सभ्यताएँ एक ही भौगोलिक क्षेत्र में विकसित हुईं, दूसरा दोनों सभ्यताओं के काल एक-दूसरे के साथ गुंथे हुए है, तीसरा, दोनों सभ्यताओं की सांस्कृतिक संरचना में अद्भुत सादृश्य है।

पुरातत्ववेत्ता इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि यह एक आश्चर्य है कि हड़प्पा सभ्यता के निर्माताओं का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है और वैदिक साहित्य की रचनाओं का कोई पुरातात्विक अवशेष ज्ञात नहीं है। विद्वान मानते हैं कि दोनों ही सभ्यताएँ एक सिक्के के दो पहलू हैं। नगरीय सभ्यता हड़प्पा के नाम से प्रसिद्ध हुई और इसी सभ्यता का जो आध्यात्मिक पक्ष है वह वैदिक सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तथापि इस दिशा में अभी और शोध तथा तथ्यों का प्रकाशन आवश्यक है।

सिन्धु सभ्यता में सामाजिक जीवन : सिन्धु सभ्यता के पुरावशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में समाज में कई वर्ग थे। इनमें कुम्भकार, बढ़ई, दस्तकार, मिस्त्री, जुलाहे, ईंट बनाने वाले, मनके बनाने वाले और मूर्तिकार प्रमुख थे। तत्कालीन समय में पुरोहित एक विशेष कार्य का प्रतिनिधित्व करते रहे होंगे। मोहनजोदड़ों से प्राप्त अवशेष इस बात को इंगित करते हैं।

इसके अतिरिक्त सिन्धु सभ्यता में प्रशासनिक, सैन्य व राजकर्मचारियों के साथ-साथ बुद्धिजीवी व्यापारी व श्रमजीवी कर्मचारी भी निवास करते थे। सिन्धु सभ्यता के लोग कलात्मक दृष्टि रखते थे। वे साज-श्रृंगार आदि

शारीरिक सुन्दरता के प्रति जागरूक थे। सिन्धु सभ्यता के लोग केशसज्जा, आभूषण आदि सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रति सचेत थे। स्त्रियों का समाज में विशेष महत्व था। इस काल में लोग गीत-संगीत, नृत्य आदि में पारंगत थे। नृत्यांगना की मूर्ति का खुदाई में मिलना इस बात को प्रमाणित करता है। इस काल में शाकाहारी व मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन थे। आभूषणों में कांसा, तांबा, सीप, मिट्टी के मनके, हाथीदांत के आभूषण, सींग तथा हड्डी के मनके, बालों का कांटा, अंगूठी, चूड़ियां, हार बाजूबंद, सीसफूल, कर्णफूल, पायल आदि प्रचलित थे। ये लोग शिकार के भी शौकीन थे। मोहन जोदड़ो से प्राप्त अवशेषों यथा एक मोहर पर योगी की आकृति (पशुपतिनाथ शिव के अनुरूप) लिंगीय प्रस्तर (शिवलिंग से मिलते-जुलते) इत्यादि से उस समय की धार्मिक विश्वासों का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त नागपूजा, वृक्षपूजा, सूर्यपूजा व जलपूजा के साक्ष्य उत्खनन से प्राप्त हुए है।

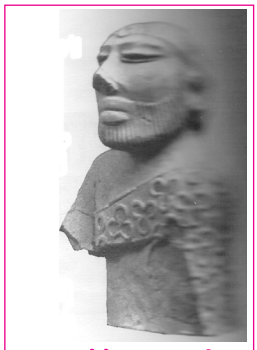
शाल ओढ़े पुरूष प्रतिमा

हड़प्पा से प्राप्त आभूषण

सिन्धु सभ्यता में आर्थिक जीवन : इस समय में अर्थव्यवस्था उन्नत थी। कृषि मुख्य व्यवसाय था। कृषि कार्य के अतिरिक्त पशुपालन, उद्योग धन्धे, आंतरिक एवं बाह्य व्यापार, मूर्ति उद्योग, ईंट उद्योग, शिल्प कला इत्यादि प्रमुख उद्योग थे। सिन्धु निवासियों के विदेशों से व्यापारिक संबंध थे। विदेशों से सम्पर्क थल एवं जल दोनों मार्गों से था। थल पर बैलगाड़ियों एवं जल में जहाजों का प्रयोग किया जाता था। सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थानों से प्राप्त वस्तुओं की साम्यता को देखकर प्रतीत होता है कि आर्थिक क्षेत्र में सुसंगठित शासन तन्त्र का नियन्त्रण रहा होगा।

सार्वजनिक स्नानागार: मोहनजोदड़ो में उत्खनन में एक विशाल स्नानागार मिला है, जो चौरस है, जिसके चारों तरफ बरामदा है, बरामदे के पीछे कमरे हैं, तैरने के लिए जलाशय और उसमें पानी भरने के लिए बड़े-बड़े कुँए प्राप्त हुएँ हैं, कुण्ड के प्रत्येक कोने में एक सीढ़ी है और यह स्नानागार पक्की ईंटों का बना है यह जलाशय संभवत: धार्मिक महत्व रखता था और पवित्र पर्वों पर इसमें लोग स्नान करते थे। यह जलाशय इतना सुदृढ़ बनाया गया था कि आज भी उसका अस्तित्व विद्यमान है।

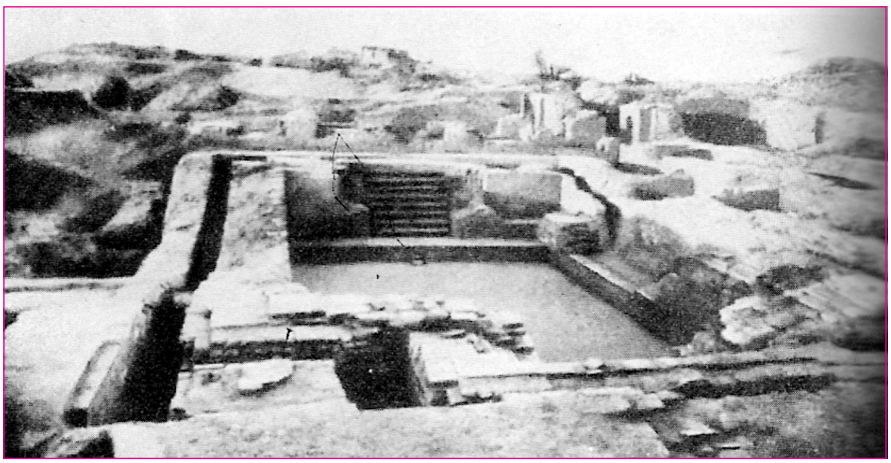
मोहनजोदड़ो का स्नानागार

राजनीतिक स्वरूप : हडप्पा सभ्यता के राजनीतिक संगठन के विषय में अधिक जानकारी नहीं मिली है परन्तु सुनियोजित नगर, कृषि और उद्योगों के प्राप्त स्रोतों के आधार पर अनुमान है कि सिन्धु क्षेत्र में केन्द्रीय नियंत्रण अवश्य रहा होगा। कदाचित, पदाधिकारी भिन्न-भिन्न नगरों में शासन करते थे। नालियों को संरक्षित और साफ रखने, स्थान-स्थान पर कूड़ा एकत्र करने के लिये मिट्टी के बने हुए घड़ों और पीपों को रखने तथा उस

संग्रह किये कूड़े को नगर के बाहर फिकवाने, सड़कों, पुलों, नहरों और सार्वजनिक भवनों के निर्माण और जीर्णोद्धार करने, व्यक्तिगत भवनों के आकार-प्रकार और खिड़कियों तथा नालियों आदि की दशा पर नियन्त्रण रखने, श्रम, मूल्य, मापतौल आदि सार्वजनिक विषयों को नियमानुकूल रखने इत्यादि के लिये प्रत्येक नगर में नगरपालिका के समान कोई संस्था रही होगी।

सिन्धु सभ्यता की देन

- सिन्धु-सभ्यता ने नगर सभ्यता से परिचित कराया।
- सुव्यवस्थित नगर-नियोजन प्रणाली दी।
- कुशल जल-निकास प्रबन्धन का ज्ञान दिया।
- लेखनकला से परिचय कराया।
- सामुद्रिक व्यापार का मार्ग प्रशस्त किया।
- अद्वितीय, कलात्मक देन (भवन-निर्माण, चित्रकला, मूर्तिकला, बर्तन व आभूषण निर्माण कला)
- सिन्धु सभ्यता से वर्तमान काल तक भारत में प्रकृति के प्रति एक धार्मिक निरन्तरता दृष्टिगोचर होती है।

सिन्धु सभ्यता का पतन : इस सभ्यता के पतन के संबंध में इतिहासकार एक मत नहीं हैं। इस सभ्यता का पतन अचानक नहीं हुआ होगा। सम्भवत: नदियों में बाढ़ आने से, नदियों द्वारा मार्ग परिवर्तन से, भूकम्प आने से, जलवायु परिवर्तन से या महामारी के फैलने से इस सभ्यता का विनाश हुआ होगा।

9.3 वैदिक सभ्यता

- वेद का अर्थ है ज्ञान अथवा पवित्र आध्यात्मिक ज्ञान
- वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
- ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को वेदत्रयी कहा जाता है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद इन चारों वेदों एवं अन्य समकालीन साहित्य लेखन के काल को वैदिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। सम्पूर्ण वैदिक काल एक लम्बे काल-खण्ड को सूचित करता है। इसे हम दो भागों में विभाजित करके अध्ययन करते हैं। पूर्व ऋग्वैदिक काल जिसमें ऋग्वेद की रचना की गई। ऋग्वैदिक काल लगभग 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. माना जाता है। उत्तर वैदिक काल में शेष तीनों वेदों की रचना हुई। इसका काल 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. माना जाता है। इसी काल में पुराण, उपनिषद, महाकाव्य व स्मृति को रखा जाता है।

सामाजिक जीवन : वैदिक काल का भारतीय समाज आर्य 'जनों' से मिलकर बना था। आर्यो के पास हजारों पालतू पशु होते थे। जानवरों के लिए जहां चारा पानी उपलब्ध होता था, वहीं ये बस जाते थे। आर्यों के सामाजिक संगठन का मुख्य आधार परिवार या कुटुम्ब था। परिवार का स्वामी या मुखिया सबसे वयोवृद्ध पुरूष होता था। इस समय संयुक्त परिवार प्रणाली थी, जिसमें कई पीढ़ियों के लोग एक साथ रहा करते थे। वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। वर्ण चार थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। ये वर्ण जन्मना नहीं थे। सामाजिक व्यवस्था के संचालन के लिये आर्यों ने अपने जीवन को सौ वर्ष का मानकर उसे चार आश्रमों में बांटा था यथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम। स्त्रियों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। समस्त सामाजिक व धार्मिक कार्यों में वे भाग लेती थीं। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करती थीं। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाएं प्रचलन में नहीं थीं।

सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र उपयोग में लाये जाते थे। स्त्रियाँ श्रृंगार में विशेष रूचि लेती थीं। विविध केश, विन्यास, सुगन्धित तेल, आभूषणों का वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलता है। चावल, जौ, घी, दूध, आर्यों का प्रमुख

भोजन था। रथदौड़, घुड़सवारी, आखेट, नृत्य जुआ, चौपड़ आदि मनोरंजन के साधन थे।

आर्थिक जीवन : वैदिक सभ्यता ग्रामीण एवं कृषि प्रधान सभ्यता थी। इस समय गेहूं, जौ, उड़द, मसूर, तथा तिल की खेती होती थी। सिंचाई की अच्छी व्यवस्था थी। कृषि के साथ पशुपालन अन्य मुख्य व्यवसाय था। गायों की संख्या समाज में प्रतिष्ठा का निर्धारण करती थी। घोड़े, गाय, बैल, भेड़, बकरी आदि पालतू पशु थे। गृह उद्योग और दस्तकारी उन्नत अवस्था में थे। बढ़ई, लुहार, सुनार, चर्मकार सभी के कार्यों का यथोचित महत्व था। व्यापार आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार का होता था। वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रचलन था। प्रारम्भ में गाय वस्तु विनिमय का प्रमुख साधन थी। ऋग्वेद में इन्द्र की मूर्ति के लिये दस गायें देने का उल्लेख मिलता है। गाय के बाद 'निष्क' का उपयोग वस्तु विनिमय के लिये किया जाता था।

धार्मिक जीवन: धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र मे आर्यों ने सर्वाधिक प्रगति की थी। उनके धार्मिक जीवन की विशेषताएं निम्नानुसार हैं :-

- वैदिक आर्य प्रकृति के उपासक थे। वे प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों की पूजा करते थे। सूर्य, चन्द्र, वायु, मेघ, उषा, अदिति प्रमुख देवी देवता थे।
- प्रत्येक आर्य के लिये यज्ञ का विधान था। उनका विश्वास था कि यज्ञ से देवता प्रसन्न होते हैं और मनोकामना पूरी करते हैं। पूजा पद्धति का मुख्य आधार 'यज्ञ' थे।
- अनेक देवताओं को पूजते हुए वे एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे।

उत्तरवैदिक काल में समाज का धार्मिक परिदृश्य बदला और धर्मगत क्लिष्टता व जटिलताएं आती गईं। अश्वमेध, राजसूय, वाजपेय जैसे महायज्ञों का सम्पादन इसी काल में शुरू हुआ। अथर्ववेद में लौकिक धर्म और विश्वासों का उल्लेख मिलता है। नैतिक आचरणों की स्थापना गृहस्थ आश्रम के माध्यम से पंचमहायज्ञों एवं तीन ऋणों के द्वारा पूरी की गईं। इसी समय विभिन्न दार्शनिक चिंतनों का विकास हुआ।

राजनीतिक जीवन :

- वैदिक आर्य अनेक 'जन' (कबीले) के रूप में संगठित थे। एक 'जन' में, एक 'वंश' या 'परिवार' के व्यक्ति होते थे।
- राजनीतिक व्यवस्था का आधार कुटुम्ब था। 'कुटुम्ब' का प्रधान पिता होता था। अनेक कुटुम्बों को मिलाकर एक 'ग्राम' बनता था।
- अनेक ग्रामों को मिलाकर 'विश' बनता था। जिसका प्रधान 'विशपति' कहलाता था।
- अनेक विशों को मिलाकर 'जन' बनता था जिसका प्रधान 'गोप' होता था।
- उत्तरवैदिक काल में 'जनपदों' की स्थापना हो चुकी थी।

ऋग्वैदिक काल के लोग जनजातियों में संगठित हुए जिन्हें 'जन' कहा गया। जनजाति के प्रधान या नेता को 'राजन' या 'गोपती'कहा गया जो अपने जनजाति और पशु सुरक्षित रखते थे। वैदिककालीन शासन व्यवस्था प्रमुखत: राजतंत्रात्मक थी। राजा का पद वंशानुगत या पैतृक होता था। उत्तरवैदिक काल में राजा की शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। राजा के प्रमुख कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा करना, युद्ध करना, शान्ति बनाए रखना तथा प्रजा को न्याय प्रदान करना था।

राजा की सहायता के लिये अनेक सहायक होते थे। जिनमें प्रमुख थे पुरोहित, सेनानी, ग्रामणी, सूत, संगृहीता (कोषाध्यक्ष) भागदुघ (कर संग्रहकर्ता), अक्षवाप (सारथी), पालागल (राजा का मित्र एवं विदूषक) आदि।

सभा तथा समिति : सभा तथा समिति वैदिक कालीन राजनीतिक संगठन की महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली संस्था थी। संभवत: ये राजा की स्वेच्छाचारिता पर नियंत्रण रखती थी। ऋग्वेद में इन संस्थाओं का उल्लेख है।

सैन्य संगठन : इस काल में सैन्य संगठन व युद्ध प्रणाली का पर्याप्त विकास हो चुका था। पैदल, घुड़सवार व रथ सेना होती थी। युद्धों का प्रमुख उद्देश्य 'आत्मरक्षा, विजय तथा पड़ोसी राज्यों की कीर्ति को खंडित करना था।' लोहे से निर्मित अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग होता था।

इस तरह उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि वैदिक सभ्यता के प्रशासनिक व सांस्कृतिक मूल्य वर्तमान भारत में आज भी प्रासंगिक हैं।

9.4 महाकाव्यकालीन सभ्यता

रामायण और महाभारत भारतवर्ष के दो 'महाकाव्य' है। इनके रचना काल के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है, लेकिन रामायण महाभारत से अधिक प्राचीन है। रामायण में अयोध्या व मिथिला तथा महाभारत में कुरूक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, द्वारिका आदि नगरों का उल्लेख मिलता है। पुरातात्विक उत्खननों ने यह सिद्ध किया है कि प्राय: इन सभी नगरों का अस्तित्व था।

इस काल में राजतंत्र एवं गणतंत्र दोनों प्रकार के राज्य थे। राजा का पद वंशानुगत था। लेकिन राजा निरंकुश नहीं था वह अपने धर्म और कर्तव्य से नियंत्रित था। राजा की सहायता के लिए दो संस्थाएँ- मंत्री परिषद और सभा थी। प्रशासन की सुविधा के लिए राज्य कई इकाईयों में विभक्त था। महाभारत में गणराज्यों का उल्लेख मिलता है।

9.5 जनपद एवं महाजनपदों का युग

प्रारम्भ में आर्य लोग पंजाब में सतलज, झेलम, व्यास तथा सरस्वती नदियों की घाटियों में बसे। धीरे-धीरे दक्षिण पूर्व की ओर वे गंगा के उपजाऊ प्रदेश में बसने लगे। जंगलों को साफ कर उन्होंने खेती के लिए जमीन तैयार की। यहाँ 'जनपद' बसाये। जनपद का मतलब है 'मनुष्य के बसने का एक क्षेत्र'। इन जनपदों के नामकरण उनके स्थापना करने वाले 'जन' या 'कुल' पर थे। महाभारत में अनेक जनपदों का उल्लेख है।

बड़े एवं शक्तिशाली जनपदों को महाजनपद कहा जाता था। इनके अधीनस्थ कुछ छोटे जनपद होते थे।

इसी काल में बहुत से ऐसे राज्य थे जहाँ वंशगत राजा नहीं थे। इन राज्यों को गणसंघ कहा जाता था। गणसंघों में जनपदों व महाजनपदों की तरह राजा या सम्राट का पद वंशानुगत नहीं होता था। यहाँ राज्य के राजा को जनता चुनती थी जैसे कि आज हम अपनी सरकार चुनते हैं। इन गणसंघों में कुछ थे- मिथिला के वज्जि, कपिलवस्तु के शाक्य और पावा के मल्ल आदि।

विभिन्न जनपदों, महाजनपदों तथा गणसंघों के लोगों के बीच वैवाहिक संबंध थे। वैवाहिक संबंध के बाद भी इन जनपदों, महाजनपदों व गणसंघों के बीच साम्राज्य विस्तार को लेकर युद्ध होते रहते थे। धीरे-धीरे सोलह महाजनपदों में से चार शक्तिशाली महाजनपद बने। ये थे- अवंति, मगध, कोसल तथा वत्स। अपनी शक्ति बढाने और सीमाओं का विस्तार करने के लिये मगध सदैव युद्धरत रहा। परिणाम स्वरूप वह सभी जनपदों तथा महाजनपदों में सर्वशक्तिमान बन गया।

उत्तरवैदिक काल के बाद जनपदों और गणराज्यों के द्वारा राजनैतिक व्यवस्थाओं का संचालन होता रहा। सोलह प्रमुख जनपदों एवं चार प्रमुख गणराज्यों में से कालान्तर में मगध साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ। मगध पर क्रमश: हर्यंक वंश, शिशुनाग वंश और नन्दवंश का शासन रहा। नंदवंश के घनानन्द को पराजित करके मगध पर चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई। इसका प्रधानमंत्री कौटिल्य (चाणक्य) था जिसने अर्थशास्त्र की रचना की।

सिकन्दर का भारत आगमन : यह यूनानी शासक अपने विश्व विजय अभियान के संबंध में भारत आया था। वह मकदूनियां के शासक फिलिप का पुत्र था। पिता की मृत्यु के बाद 20 वर्ष की उम्र में सिंहासन पर बैठा। वह असाधारण महत्वकांक्षाओं वाला शासक था। फारस को परास्त करने के उपरांत वह 'सोने की चिड़िया' कहे जाने वाले भारत में प्रविष्ट हुआ। सिकन्दर को एक जन-जातीय शासक हस्ती, जिसे यूनानी एस्ट्स कहते हैं के विरूद्ध लड़ना पड़ा, जिन्होंने सिकन्दर का जमकर प्रतिरोध किया। हस्ती के वीरगति को प्राप्त करने के बाद उनकी रानी एवं अन्य स्त्रियों ने अंतिम क्षण तक अपने देश की रक्षा का प्रण लेकर युद्ध में भाग लिया। अंततः विजय सिकन्दर को मिली। सिकन्दर आगे बढ़ा और तक्षशिला के शासक आंभि ने सिकन्दर के सामने आत्मसर्मपण कर दिया लेकिन झेलम प्रदेश के शासक पोरस ने आत्मसर्मपण से इंकार कर दिया। सिकन्दर और पोरस की सेना झेलम नदी के आर-पार एक-दूसरे के सामने आई। सिकन्दर ने अनुभव किया कि शत्रु के विरोध के कारण नदी पार करना संभव नहीं होगा। अतः उसने रात के समय पोरस की सेना पर आक्रमण कर दिया। पोरस सिकन्दर के साथ वीरता से लड़ा, लेकिन जीत सिकन्दर की हुई। बाद में सिकन्दर ने पोरस की वीरता व स्वाभिमान को देखते हुए उसके साथ एक राजा के समान व्यवहार किया और उसका राज्य लौटा दिया। जब सिकन्दर अपने देश लौट रहा था तब मार्ग में (323, ई.पू.) उसकी मृत्यु हो गई।

9.6 जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म

ई.पूर्व छटी शताब्दी का भारत के इतिहास में प्रमुख स्थान है। इसी समय बौद्ध एवं जैन धर्म का अर्विभाव हुआ। इनका उद्देश्य समाज में व्याप्त तत्कालीन अनियमितताओं और कुरूतियों को दूर करना था।

जैन धर्म : जैन धर्म के संस्थापक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हुए। वर्धमान महावीर जैन धर्म के चौबीसवे तीर्थंकर थे। महावीर का जन्म कुण्डग्राम के राजा सिद्धार्थ के यहां हुआ था। वर्धमान (महावीर) बचपन से ही चिंतनशील एवं गंभीर स्वभाव के थे। पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने सन्यास ग्रहण कर लिया। बारह वर्ष की घोर व कठिन तपस्या के उपरांत उन्हें कैवल्य ज्ञान (आत्म ज्ञान) की प्राप्ति हुई। इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण वे जिन (इंद्रियों को जीतने वाला) कहलाए और उनके अनुयायियों को 'जैन' कहा गया। जैन धर्म का मुख्य सिद्धांत अहिंसा है। जैन धर्म के अनुसार जीव हत्या न करना ही पर्याप्त नहीं है वरन् हिंसा के विषय में सोचना, बोलना व दूसरों को करने देना भी अधर्म है। महावीर स्वामी ने पांच महाव्रतों (अंहिसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य)के पालन का उपदेश दिया।

बौद्ध धर्म : बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध थे, जिनका जन्म कपिल वस्तु के शासक शुद्धोधन के राज परिवार में लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। सिद्धार्थ (बुद्ध) बचपन से ही चिंतनशील एवं गंभीर स्वभाव के थे। सांसारिक दुखों से मुक्ति एवं मोक्ष की खोज में सिद्धार्थ ने घर, पत्नी एवं पुत्र को छोड़ दिया और ज्ञान प्राप्ति की तलाश के बाद समाधिलीन हो गए। वैशाख पूर्णिमा के दिन उन्हें सच्चे ज्ञान का प्रकाश मिला। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ वह 'बोधि वृक्ष' और वह स्थान बौद्ध गया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महात्मा बुद्ध के शिष्यों ने उनके उपदेशों एवं वचनों का संकलन त्रिपिटकों के रूप में किया। महात्मा बुद्ध मुख्य रूप से एक धर्म सुधारक थे। उन्होंने धर्म की कुरूतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। महात्मा बुद्ध का मत था कि मनुष्य के जीवन में आदि से लेकर अंत तक दुःख ही दुःख है। अतः इस दुःख के लिए उन्होंने चार आर्य सत्यों व अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने के लिए कहा। भारत के अतिरिक्त लंका, चीन, जापान, जावा, सुमात्रा आदि देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ।

मौर्यवंश के प्रमुख शासक (समयानुमान लगभग)

- चन्द्रगुप्त मौर्य — 322 ई.पू. से 298 ई.पूर्व
- बिन्दुसार — 298 ई.पू. से 273 ई.पूर्व
- अशोक महान — 273 ई.पू. से 236 ई.पूर्व

9.7 मौर्य साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य भारत के महानतम साम्राज्यों में से एक है। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में भारत में सर्वप्रथम

राजनीतिक एकता की स्थापना हुई। इसी काल में तिथिबद्ध लेखन प्रारंभ हुआ। मौर्यकाल की जानकारी हमें मुख्यत: कौटिल्य के अर्थशास्त्र, विशाखदत्त के मुद्राराक्षस, मेगस्थनीज की इंडिका, यूनानी लेखकों के विवरणों, अशोक के विभिन्न लेखों, दीपवंश और महावंश नामक ग्रंथों से मिलती है।

चन्द्रगुप्त मौर्य की गणना भारत के महानतम शासकों में की जाती है। इसने चाणक्य की सहायता से मगध में नन्दवंश का अन्त कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी। यूनानी लेखकों ने अपने ग्रंथों में उसे 'सेन्ड्रोकोटस' कहा है।

चन्द्रगुप्त मौर्य महान विजेता, महान कूटनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, धर्मपरायण एवं प्रजाहितैषी शासक था। वह प्राचीन भारत में नवीन राजनैतिक व्यवस्था लागू करने वाला प्रथम प्रशासक था, जिसने केन्द्रीय, प्रान्तीय, नगरीय व ग्राम्य प्रशासन जैसी व्यवस्थाओं को दिशा दी।

चन्द्रगुप्त ने लगभग 305 ई.पू. में यूनानी सेनापति सेल्यूकस निकेटर को परास्त कर काबुल, कंधार, हिरात और बलूचिस्तान के प्रदेशों तक अपना राज्य विस्तार किया। बदली हुई परिस्थितियों में सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया व संधि कर ली। चन्द्रगुप्त के दरबार में मैगस्थनीज राजदूत बनकर आया। उसने अपनी पुस्तक इण्डिका में उस समय के समाज का वर्णन किया है। चन्द्रगुप्त ने उत्तरी भारत पर विजय के बाद काठियावाड़, सौराष्ट्र और दक्षिण भारत के कुछ भागों पर विजय प्राप्त की।

अपने अन्तिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म अंगीकार कर लिया था। सिंहासन व राज्य वैभव त्यागकर वह दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला की पहाड़ियों पर चला गया, और वही उसकी मृत्यु हुई थी।

शासन प्रबन्ध : चन्द्रगुप्त के शासन प्रबन्ध के संबंध में जानकारी हमें मेगस्थनीज की 'इंडिका' तथा कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' से होता है। उसके शासन की विशेषताएं निम्नानुसार हैं :-

1. सम्राट, साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता था। वह सेना, न्याय-व्यवहार का प्रधान होता था। वह प्रजा-हित के कार्यों में संलग्न रहता था।
2. राजा की सहायता हेतु मंत्रिपरिषद थी।
3. गुप्तचर, न्याय व्यवस्था एवं सैन्य संगठन सुदृढ़ था।
4. भूमिकर राज्य की आय का प्रमुख साधन था। उपज का 1/6 वा भाग कर रूप में लिया जाता था।
5. कर एकत्र करने वाला अधिकारी 'समाहर्ता' कहलाता था।
6. साम्राज्य प्रान्तों में विभाजित थे। जो चक्र कहलाते थे। इनका शासन राजकुमार अथवा राजपरिवार के व्यक्तियों द्वारा होता था।
7. नगरों का प्रबन्ध करने हेतु छः समितियां होती थीं। प्रत्येक में पांच-पांच सदस्य होते थे।
8. सैन्य संगठन सुदृढ़ था। इसकी देखरेख 6 समितियों द्वारा होती थी। ये समितियां- नौ-सैना समिति, पदाति-सेना समिति, अश्व-सेना समिति, रथ सेना समिति, गज सेना समिति, यातायात व युद्ध सामग्री-वाहिनी समिति थी।
9. दण्ड-विधान कठोर था।
10. कौटिल्य के अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में दो प्रकार के न्यायालय विद्यमान थे पहला धर्मस्थीय (दीवानी) न्यायालय, दूसरा कंटकशोधन (फौजदारी) न्यायालय।

बिन्दुसार

चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चात उसका पुत्र बिन्दुसार मगध का सम्राट बना। उसे 'अमित्रघात' भी कहा जाता था। वह वीर, साहसी और पराक्रमी था। पश्चिमी एशिया के यूनानी राजाओं से उसके संबंध मित्रतापूर्ण थे। पिता से प्राप्त साम्राज्य की सुरक्षा व व्यवस्था करने में वह सफल हुआ।

अशोक महान

अशोक मौर्यवंश का तीसरा और सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट था। अपने पिता बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक ने अपनी योग्यता व प्रतिभा का परिचय दे दिया था। अशोक का राज्याभिषेक 269 ई.पू. के लगभग हुआ था। अपने शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में अशोक ने अपने पितामह चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा प्रारंभ की गई साम्राज्यवादी एवं दिग्विजय नीति का अनुसरण किया।

उसने कलिंग से युद्ध किया था। कलिंग प्रान्त वर्तमान उड़ीसा में था। अशोक और कलिंग की सेनाओं के बीच बड़ा भीषण युद्ध हुआ। अंत में विजय अशोक की हुई। अशोक के तेरहवें शिलालेख के अनुसार इस युद्ध में डेढ़ लाख लोगों को बंदी बना लिया गया, एक लाख हताहत हुए और उससे कई गुना अधिक मारे गए। युद्ध की विभीषिका और रक्तपात देखकर अशोक को आत्मबोध हुआ। इस युद्ध का महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया। भयंकर रक्तपात व नरसंहार देख उसका मन पश्चाताप से भर उठा और उसने युद्ध के स्थान पर शांति की नीति अपनाई। उसने निश्चय किया कि युद्ध-यात्राओं के स्थान पर धर्मयात्राएं की। उसने युद्धघोष को धर्मघोष में बदल दिया और बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया। कलिंग युद्ध ने अशोक के जीवन को नवीन दिशा प्रदान की।

अशोक का धम्म (धर्म)

कलिंग युद्ध के उपरान्त अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। अपने लेखों में उसने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्तों का ही नहीं अपितु उसके कुछ नैतिक सिद्धान्तों का भी प्रचार किया। उसका धम्म सब धर्मों का सार था। अशोक का धम्म सर्वमंगलकारी है, जिसका मूल उद्देश्य प्राणी का मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान करना था। उसका धम्म अत्यन्त सरल तथा व्यावहारिक था।

अशोक के धम्म की विशेषताएँ

- सर्वभौमिकता।
- अनुशासन व शिष्टाचार को महत्व
- अहिंसा व धार्मिक सहिष्णुता।
- नैतिक आदर्शों की प्रधानता।
- सत्य जीवन अपनाने पर बल।

प्राणिमात्र पर दया करना, सत्य बोलना, सबके कल्याण की कामना रखना, माता-पिता गुरूजनों का आदर-सम्मान करना- अशोक के धम्म के प्रधान लक्षण थे। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये विदेशों में प्रचारक भेजे। अशोक ने कई शिलालेख, लघुशिलालेख, स्तम्भ लेख बनवाए। श्रीलंका में उसके पुत्र-पुत्री महेन्द्र व संघमित्रा प्रचार हेतु गए। उसने स्तूपों का निर्माण कराया, धर्मलेख उत्कीर्ण कराए, धर्म विभाग की स्थापना कर धर्ममहामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की। अशोक के अधिकांश अभिलेखों में उसके लिये 'देवानांप्रियो प्रियदर्शी राजा' शब्द का उल्लेख मिलता है। जिसका अर्थ होता है देवताओं का प्रिय राजा।

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण :

1. अशोक के उत्तराधिकारी अयोग्य थे उन्होंने विशाल साम्राज्य का परस्पर विभाजन कर लिया वे पूर्वजों के साम्राज्य को सुरक्षित नहीं रख पाए।
2. प्रान्तीय अधिकारियों के अत्याचार।
3. प्रजा में राष्ट्रीय भावना का अभाव।
4. अशोक की अहिंसा की नीतियों ने राज्य की सैनिक-शक्ति को दुर्बल बना दिया था। इससे प्रशासनिक व्यवस्था में शिथिलता आती गई।

मौर्यों के अन्तिम शासक वृहद्रथ का उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने वध कर मौर्य वंश का अंत कर दिया। पुष्यमित्र शुंग ने अश्वमेघ यज्ञ किया। मौर्यों के उपरान्त शुंग, कण्व सातवाहन, शक कुषाण वंशों ने भारत पर शासन किया। कनिष्क के शासन काल में काश्मीर के कुण्डल वन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

9.8 गुप्त साम्राज्य

मौर्यों के पश्चात भारत की राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः स्थापित किया। इस युग में भारत की अभूतपूर्व आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक उन्नति हुई। गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।

गुप्तवंश के प्रमुख शासक (समयानुमान लगभग)

श्रीगुप्त(संस्थापक)	275 ई. से 300 ई.
घटोत्कच	300 ई. से 319 ई.
चन्द्रगुप्त प्रथम	319 ई. से 335 ई.
समुद्रगुप्त	335 ई. से 375 ई.
रामगुप्त	375 ई. से 380 ई.
चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य'	380 ई. से 412 ई.
कुमारगुप्त	413 ई. से 455 ई.
स्कन्दगुप्त	455 ई. से 467 ई.

श्रीगुप्त

गुप्तवंश का संस्थापक श्रीगुप्त था। उसके बाद घटोत्कच (300 ई.से. 319 ई.) राजा बना ।

चन्द्रगुप्त : घटोत्कच के उपरान्त उसके

पुत्र चन्द्रगुप्त (प्रथम) ने गुप्त साम्राज्य की बागडोर संभाली। चन्द्रगुप्त के लिये 'महाराजाधिराज' उपाधि का उल्लेख मिलता है। चन्द्रगुप्त का विवाह लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के साथ हुआ। इसी समय 'गुप्त संवत' का प्रचलन शुरू हुआ। उसने एक शक्तिशाली साम्राज्य की नींव डाली और अपना साम्राज्य विस्तार किया।

समुद्रगुप्त : चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त सिंहासनासीन हुआ। उसने पिता से प्राप्त साम्राज्य की सीमाओं को और विस्तृत कर भारत को राजनीतिक एकता प्रदान की। समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान में उत्तरी भारत के नौ शक्तिशाली गणराज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाया। उसने मध्य भारत के 18 आटविक राज्यों पर विजय प्राप्त की। इसके उपरान्त अपने दक्षिणापथ अभियान में उसने दक्षिण भारत के 12 राज्यों पर विजय प्राप्त कर उन राजाओं को राज्य पुनः लौटा दिए। इन राज्यों द्वारा गुप्त शासकों को वार्षिक कर दिया जाता था। आर्यावर्त और दक्षिणापथ में समुद्रगुप्त की विजयों से सीमान्त राज्य और गणराज्य भयभीत हो गये और उन्होंने बिना युद्ध के समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली। विजयोपरान्त उसने अश्वमेध यज्ञ किया और स्वर्ण मुद्राएं प्रचलित की। उसकी विजयों का उल्लेख हरिषेणकृत प्रयागप्रशस्ति के स्तंभलेख में मिलता है जो इलाहाबाद में स्थित है।

समुद्रगुप्त एक महान सेनानायक, कुशल राजनीतिज्ञ एवं अजेय योद्धा था। प्रसिद्ध इतिहासकार स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारतीय नेपोलियन कहा है। कुछ भारतीय इतिहासकारों द्वारा समुद्रगुप्त को नेपोलियन की तुलना में अधिक महान और व्यवहारिक कहा जाता है, क्योंकि समुद्रगुप्त ने अनेक विजय प्राप्त की एवं विजित प्रदेशों को साम्राज्य में सम्मिलित नहीं किया और न ही उसने उन राज्यों पर अपनी इच्छा थोपने का प्रयास किया। उसने मात्र भेंट अथवा कर लेकर उन शासकों को स्वतंत्र किन्तु मित्र रूप में रहने दिया।

समुद्रगुप्त ने अपने उत्तराधिकारी को एक संगठित व विस्तृत राज्य प्रदान किया, जहाँ शांति थी, समृद्धि और सम्पन्नता थी, जिसके चारों ओर पराजित किन्तु मित्रवत शासक थे। देश में सांस्कृतिक विकास के लिए सर्वश्रेष्ठ वातावरण था। उसके शासनकाल में कला, साहित्य व्यापार-व्यवसाय, संगीत, धर्म क्षेत्र में उन्नति हुई। संक्षेप में देश प्रगति के पथ पर अग्रसर था। गुप्त साम्राज्य में सर्वप्रथम वैष्णव धर्म से संबंधित दशावतार प्रतिमाओं का अंकन किया गया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' : अपने पिता समुद्रगुप्त से प्राप्त साम्राज्य को चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अधिक सुदृढ़ और सुरक्षित बनाया।

- चन्द्रगुप्त ने नागवंश की राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया। इससे दोनों राजवंशों में मित्रता हुई। उसने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय के साथ किया। इस संबंध से चन्द्रगुप्त को शकों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सफलता मिली। यह विवाह संबंध राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। कदम्बवंश की राजकन्या का विवाह भी गुप्तवंश में हुआ था। इस विवाह संबंध द्वारा चन्द्रगुप्त द्वितीय का यश दक्षिण भारत में भी फैल गया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रमुख उपलब्धि शक विजय थी। शकों पर अधिकार के परिणामस्वरूप पश्चिमी मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र, कठियावाड़ के प्रदेश गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत आ गए। गुप्तों की पश्चिमी सीमा अरब सागर तक पहुंच गई।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के लिए 'विक्रमादित्य' उपाधि का उल्लेख मिलता है। वह एक कुशल नीतिकार था। चन्द्रगुप्त द्वितीय महान विजेता तथा कुशल प्रशासक के साथ-साथ विद्यानुरागी, प्रजावत्सल, विद्वानों का आश्रयदाता था। उसके दरबार के नवरत्नों में संस्कृत के कवि कालिदास सर्वोपरि थे। चन्द्रगुप्त के काल में विज्ञान, स्थापत्य एवं मूर्तिकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। चीनी यात्री फाह्यान इसी के शासनकाल में भारत आया था। वह 405 से 411 ई. तक भारत में रहा। उसने अपने यात्रा वृतांत में तत्कालीन भारतीय राजनीतिक सामाजिक व आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है।

विक्रमादित्य उज्जैन के न्यायप्रिय शासक थे, उन्होंने शकों पर विजय प्राप्त की और एक नवीन सम्वत् को प्रारंभ किया, जिसे विक्रम सम्वत् के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में भारत में विक्रम सम्वत् मान्य है तथा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गुड़ीपड़वा से नवीन सम्वत् प्रारंभ होता है।

कुमार गुप्त

चन्द्रगुप्त द्वितीय का वह उत्तराधिकारी हुआ। उसने पूर्वजों से प्राप्त साम्राज्य को सुरक्षित रखा। शांति, स्थिरता, सुव्यवस्था के कारण गुप्त साम्राज्य इस समय वैभव के चरम शिखर पर था।

स्कन्दगुप्त

कुमारगुप्त के बाद स्कन्दगुप्त सिंहासन पर बैठा। उसने हूणों के आक्रमणों से भारतवर्ष की रक्षा की। उसने पश्चिमोत्तर सीमान्त प्रदेशों का महत्व समझा और उसकी रक्षा का पूरा प्रबंध किया। इसके पश्चात् पुरुगुप्त, कुमार गुप्त, बुधगुप्त, वैन्य गुप्त, भानु गुप्त, नरसिंह गुप्त, कुमार गुप्त तृतीय व विष्णु गुप्त अन्य शासक हुए।

शासन व्यवस्था :

गुप्तकाल की शासन व्यवस्था		
केन्द्रीय शासन	प्रान्तीय शासन	स्थानीय शासन
● राजा	● भुक्ति (प्रान्त)	● नगर शासन
● मंत्रिपरिषद	● प्रदेश	
● पदाधिकारी	● विषय	● ग्राम शासन
● न्याय व्यवस्था		
● सैनिक प्रशासन		
● राजस्व व्यवस्था		

मौर्य शासकों की भांति गुप्त राजाओं ने भी लोक कल्याण को प्रशासन का मूल आधार बनाया। राजा राज्य का सर्वोच्च अधिकारी था, राज्य की अन्तिम सत्ता उसी के हाथ में थी। राजा की सहायता के लिये मंत्रिपरिषद व अन्य पदाधिकारी होते थे। राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत 'भूमिकर' था जिसे 'भाग' कहते थे। यह सामान्यतया उपज का 1/6 भाग हुआ करता था। गुप्त प्रशासन तीन भागों में विभाजित था। केन्द्रीय, प्रान्तीय व स्थानीय शासन। गुप्त शासकों का ध्येय जनकल्याण था। इस हेतु उन्होंने औषधालय, चिकित्सालय, धर्मशालाएं, पाठशालाएं, सड़कें, विश्रामगृह आदि बनवाए।

गुप्तकाल प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग

गुप्तकाल के स्वर्ण युग कहलाने के प्रमुख कारण

1. महान शासकों का युग।
2. शांति सुव्यवस्था का युग ।
3. राजनीतिक एकता का युग ।
4. आर्थिक समृद्धि का युग।
5. कलात्मक उन्नति का युग ।
6. साहित्यिक उन्नति का युग।
7. वैज्ञानिक प्रगति का युग ।
8. बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित।

गुप्तकाल में भारत की चहुंमुखी उन्नति हुई इसी कारण इस काल को स्वर्णयुग की संज्ञा दी गई है। इस काल में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त व चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' जैसे महान सम्राट हुए। शासकों ने प्रजा के कल्याण का पूर्ण ध्यान रखा। शांति सुव्यवस्था बनाए रखी। प्रत्येक शासक भारत को एक राजनीतिक इकाई में संगठित करने हेतु प्रयत्नशील रहा। सर्वत्र आर्थिक समृद्धि हुई। फलतः कला, साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। इस युग में वराहमिहिर, आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त जैसे गणितज्ञ व वैज्ञानिक हुए। आर्यभट्ट ने सौर सिद्धान्त ग्रंथ में चन्द्र व सूर्य ग्रहण होने के कारण बताए। यह भी बताया कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा अपने निश्चित पथ पर करती है। उन्होंने आर्यभटीयम् नामक ग्रंथ भी लिखा। इसी काल में शून्य का अविष्कार व दशमलव प्रणाली का प्रारंभ हुआ। गुप्तकाल के प्रमुख गणितज्ञ ज्योतिषविद्या में निपुण थे। इस काल में गणित व ज्योतिष के अतिरिक्त साहित्य, चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पकला, भौतिक शास्त्र, धातुविज्ञान आदि खगोलीय घटनाओं का ज्ञान अपने चर्मोत्कर्ष पर था।

गुप्त साम्राज्य का पतन

1. स्कन्दगुप्त के बाद गुप्तवंश में योग्य शासक नहीं हुए। वे आन्तरिक विद्रोहों और विदेशी आक्रमण से अपने साम्राज्य की रक्षा करने में असमर्थ रहे।
2. हूणों के आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य को अत्याधिक क्षति पहुंचाई।
3. उत्तराधिकार का नियम निश्चित न होने से आपसी संघर्ष बढ़ गए, जिससे सत्ता पक्ष कमजोर हुआ।
4. परवर्ती गुप्तों के समय में आर्थिक स्थिति दुर्बल होती गयी।
5. प्रान्तपतियों की महत्वाकांक्षा गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण बनी।
6. सामंतों को अत्याधिक शक्तियां प्रदान करना भी गुप्तों के पतन का कारण बनी।

9.9 हर्ष साम्राज्य

सम्राट हर्षवर्धन थानेश्वर के शासक प्रभाकर वर्धन का पुत्र था। प्रभाकर वर्धन के बाद उसका पुत्र राज्यवर्धन गद्दी पर बैठा। राज्यवर्धन अपनी बहन राजश्री के पति कन्नौज नरेश गृहवर्मा की मदद के लिये मालवा शासक देवगुप्त से संघर्षरत रहा। देवगुप्त ने गृहवर्मा की हत्या कर दी। राज्यवर्धन ने देवगुप्त को पराजित किया किन्तु देवगुप्त के मित्र बंगाल नरेश शशांक ने धोखे से राज्यवर्धन का वध कर दिया। इन परिस्थितियों में हर्ष थानेश्वर का शासक हुआ। वह 16 वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठा। उसकी बहन राज्यश्री के कोई सन्तान न होने से कन्नौज का राज्य भी उसे ही मिला। इस प्रकार वह थानेश्वर और कन्नौज दोनों का स्वामी हो गया। उसका साम्राज्य उत्तर में हिमालय से दक्षिण में नर्मदा नदी तक पूरब में बंगाल से सिन्धु तक फैला हुआ था। चीन और फारस से उसके राजनीतिक संबंध थे। साम्राज्य विस्तार को दिए गए मानचित्र में देखिए।

शासन प्रबंध : महान विजेता होने के साथ-साथ हर्ष कुशल प्रशासक भी था। कुछ परिवर्तनों के साथ उसने गुप्त-कालीन व्यवस्था का ही अनुसरण किया।

हर्ष के शासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक था। केन्द्रीय शासन में सम्राट का स्थान सर्वोपरि था। वही सेना का प्रधान और सर्वोच्च न्यायाधीश भी होता था। प्रजा का कल्याण उसका मुख्य उद्देश्य था। सम्राट की सहायता के लिये अनेक मंत्री व सचिव होते थे। मंत्रिपरिषद के निर्णय को मानने हेतु सम्राट बाध्य नहीं था। विभागीय पदाधिकारी जैसे महाबलाधिकृत (सेनाध्यक्ष), महासन्धिविग्रहाधिकृत (युद्ध व शक्ति सचिव) भी होते थे।

साम्राज्य की विशालता के कारण प्रशासकीय सुविधा हेतु उसे प्रान्तों में विभाजित किया गया। प्रान्त, भुक्ति या देश कहलाते थे। भुक्ति के शासक उपरिक कहलाते थे। इन पदों पर राजवंश के राजकुमार या राजपरिवार के सदस्य ही नियुक्त होते थे। प्रत्येक प्रान्त अनेक विषय (जिलों) में विभाजित था। विषय का शासक विषयपति कहलाता था। यह जिले की विभिन्न गतिविधियों का निरीक्षण करता था। शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी। हर्ष के पास एक विशाल सेना थी।

हर्ष के शासनकाल में दण्ड विधान कठोर था। कुछ अपराधों के लिये अंग-भंग का दण्ड दिया जाता था। दण्ड विधान कठोर होने से अपराध कम होते थे। हर्षवर्धन के संदर्भ में बाणभट्ट के हर्ष चरित व चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत से जानकारी प्राप्त होती है।

राज्य की आय का मुख्य साधन भूमिकर था। भूमिकर सामान्य: उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। अनाज के रूप में कर चुकाने की व्यवस्था थी। इसके अतिरिक्त मण्डी, घाटों, व्यापारियों पर कर व अर्थदण्ड राज्य की आय के प्रमुख साधन थे।

हर्ष भारत के महान शासकों में से एक था। सामान्यत: यह माना जाता है कि हर्षवर्धन का सम्पूर्ण उत्तरी भारत में एकछत्र राज्य था। वह महान विजेता, कुशल प्रशासक, लोक कल्याणकारी, महान धर्मपरायण, विद्याप्रेमी व महान दानी था। उसकी विजयों और धर्म प्रचार कार्यों के कारण उसे समुद्रगुप्त और अशोक का सम्मिश्रण कहा गया है।

उत्खनन : खोदना।

मनके : मोती जैसे छोटे-छोटे छिद्रयुक्त- पत्थर, मिटटी, सेलखड़ी एवं धातु के दाने।

वस्तु-विनिमय प्रणाली: वस्तु के बदले वस्तु देने लेने की प्रथा।

निष्क : विनिमय में प्रयुक्त होने वाला वैदिक कालीन सिक्के।

राजतंत्र : वंशानुगत राजा द्वारा चलाया जाने वाला शासन।

गणतंत्र : एक प्रकार की सरकार जिसका प्रमुख प्रजा/जनता द्वारा चयनित होता है।

जनपद : पूर्ण रूप से सीमांकित क्षेत्र का राज्य।

महाकाव्य : महान चरित्र के जीवन से संबंधित विस्तृत काव्य रचना।

त्रिपिटक : महात्मा बुद्ध के वचनों व उपदेशों का संकलन। उनके निकटतम् शिष्यों द्वारा त्रिपिटकों- विनय पिटक, सुतपिटक व अभिधम्म पिटक के रूप में किया गया है।

आष्टांगिक मार्ग : महात्मा बुद्ध के अनुसार दु:खों से मुक्त होने अथवा निर्वाण प्राप्त करने के लिए जो मार्ग है, उसे आष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् उन्मति, कर्म सम्यक् अजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि।

पंचमहाव्रत् : जैन भिक्षु, भिक्षुणियों के लिए पांच महावत्– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य।

तीर्थंकर : जैन धर्म के संस्थापक मुनि।

अस्तेय : बिना किसी की अनुमति के किसी की वस्तु न ग्रहण करें और न ग्रहण करने की इच्छा ही करें।

अपरिग्रह : आवश्यकता से अधिक का संग्रह नहीं करना चाहिए।

आर्यावृत्त : उत्तरी भारत।

दक्षिणापथ : दक्षिण भारत।

अभ्यास

सही विकल्प चुनकर लिखिए –

1. निम्नलिखित में कौन सा नगर सिन्धु सभ्यता से संबंधित नहीं है–

   (i) मोहनजोदड़ो (ii) कालीबंगा

   (iii) लोथल (iv) पाटलीपुत्र

2. चन्द्रगुप्त मौर्य के समय कौन सा विदेशी यात्री भारत आया था–

   (i) फाहयान (ii) ह्वेनसांग

   (iii) एरियन (iv) मेगस्थनीज

सही जोड़ी बनाइए–

	'अ'		'ब'
1.	चन्द्रगुप्त मौर्य	1.	कौटिल्य
2.	अर्थशास्त्र	2.	महात्मा बुद्ध
3.	लुम्बिनी	3.	विक्रमादित्य
4.	चन्द्रगुप्त द्वितीय	4.	मगध
5.	अशोक	5.	कलिंग युद्ध

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. जैन धर्म के संस्थापक ..... थे।
2. महात्मा बुद्ध को ..... वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।
3. ..... और ..... भारत के दो महाकाव्य है।
4. गुप्तवंश का संस्थापक..... था।

अतिलघुत्तरीय प्रश्न –

1. वेदों की संख्या एवं उनके नाम लिखिए।
2. सिन्धु सभ्यता के चार प्रमुख नगरों के नाम लिखिए।
3. मेगस्थनीज कौन था एवं उसके द्वारा रचित ग्रंथ का नाम लिखिए।
4. प्राचीन भारत के प्रमुख शिक्षा केन्द्रों के नाम लिखिए।
5. चाणक्य कौन था, उसके द्वारा रचित कृति का नाम लिखिए।
5. हूणों के आक्रमणों को विफल करने में कौन सा गुप्त शासक सफल हुआ?
6. विक्रम सम्वत् किसने चलाया था?

लघुत्तरीय प्रश्न –

1. मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा नगरों की खोज किसने की थी?
2. सरस्वती नदी के बारे में प्राप्त नवीन जानकारियों का वर्णन कीजिए।
3. कलिंग युद्ध का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है? लिखिए।
4. चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा स्थापित वैवाहिक संबंध का राजनीतिक महत्व लिखिए।
5. गुप्तकाल की शासन व्यवस्था की विशेषताएँ लिखिए।
6. हर्ष के साम्राज्य विस्तार के बारे में लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. वैदिक सभ्यता का वर्णन कीजिए।
2. सिन्धु सभ्यता की क्या देन है? समझाइए।
3. चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था की विशेषताएं लिखिए।
4. अशोक के धम्म को समझाते हुए उसके धर्म की विशेषताएँ बताइए।
5. गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा गया है, इस कथन की व्याख्या कीजिए।
6. समुद्रगुप्त की विजय अभियान का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
7. सम्राट हर्षवर्द्धन के शासन प्रबंध का वर्णन कीजिए।

❖❖ ★★ ❖❖